आज के लिए यीशु

"हो सकता है कि यह सच हो कि यीशु ने एक ही शब्द बोलकर अरबों–खरबों सितारों और इस सृष्टि की हर वस्तु को रचा। तो क्या ?" आप कहते हैं "और अगर वह क्रूस पर मरा भी और फिर से जिया भी तो मैं कैसे खुद को इस 2000 साल पुराने यीशु से जोड़ सकता हूं ?" आपको सन्देह भी हो सकता है कि वह आपका नाम जानता है या आपको पसन्द करता है..... और आपसे प्रेम करता है।

अगर यीशु मसीह वास्तव में इस सृष्टि का रचने वाला है और मरे हुए डी.एन.ए. को ज़िन्दा बना सकता है तो क्या उसे आज भी ज़िन्दगियों को बदल देने की सामर्थ्य प्राप्त है ? निश्चित रूप से उसने इस सामर्थ्य के होने का दावा किया। यीशु ने कहा,

"मैं इसलिये आया कि वे जीवन पाएं, और बहुतायत से पाएं..... पूरा पूरा, जब तक कि वह छलक न जाए"। यूहन्ना 10:10ब

अधिकतर, लोग उस आशा और उद्देश्य के प्रति अन्जान रहते हैं जो हमें यीशु देता है और अपनी ज़िन्दगियों में बहुत खालीपन महसूस करते हैं जिसे वे लगातार, भरने की कोशिश करते हैं।

महान मसीही विचारक, अगस्टीन ने इस ख़ालीपन को अपने जीवन में पहचाना जिसे कि लालसा और निजी स्वार्थ के कामों ने निगल लिया था। दुख भरे बरसों के बाद आखिरकार, उसने महसूस किया कि वह शान्ति जिसकी खोज में हम रहते हैं वह यीशु से सम्बन्ध बनाने में मिलती है। वह कहता है,

"तुमने हमें अपने लिए बनाया और हमारे दिल तब तक चैन नहीं पाते जब तक वे तुम से न जुड़ें"।

अतः हमारा आख़िरी सूत्र यीशु के उन दावों को दृढ़ता देगा, जो उसकी प्रतिज्ञा है कि वह हमारे जीवनों को बदल सकता है और वह बहुतायत का जीवन देता है जिसकी प्रतिज्ञा उसने की।

सूत्र संख्या 10 : क्या यीशु के पास जीवन को बदल देने की सामर्थ्य है ?

धर्म या सम्बन्ध

एक नास्तिक के रूप में, जॉश मैकडॉवेल ने एक मसीही महिला विद्यार्थी से पूछा कि उसकी ज़िन्दगी को किस ने बदल दिया। जब वह बोली, "यीशु मसीह", तो जॉश फट पड़े :

"ओह, परमेश्वर के वास्ते, मुझे वह कूड़ा–करकट न दो। मैं धर्म से उकता गया हूं; मैं कलीसिया से उकता गया हूं; मैं बाइबिल से उकता गया हूं; मुझे धर्म के बारे में वह कूड़ा–करकट न दो"।

"उसने वापस जवाब दिया, 'श्रीमान्, मैंने धर्म नहीं कहा, मैंने यीशु मसीह कहा'। उसने ऐसी किसी बात की ओर इशारा किया था जिसे मैंने कभी नहीं जाना था। मसीहियत धर्म नहीं है। धर्म मनुष्य द्वारा परमेश्वर तक पहुंचने के रास्तों को हासिल करने के लिए अच्छे कामों के द्वारा एक कोशिश है। मसीहियत यीशु मसीह के माध्यम से मनुष्यों तक परमेश्वर का आना है, उन्हें स्वयं के साथ सम्बन्ध बनाने की यह एक पेशकश है"। एविड वॉल्यूम 1, 364

"वह हमसे भीड़ के हिस्से के रूप में व्यवहार नहीं करता। आप उसके साथ इतने एकाकी हो जाते हैं जैसे कि केवल आप ही वह जीव थे जिसकी उसने रचना की। जब यीशु मरा, तो वह केवल आपके लिए ही मरा, बिल्कुल ऐसे ही जैसे कि केवल आप ही एक व्यक्ति संसार में रहे थे"।
सी.एस. लुइस

मगरिज़ ने आत्म हत्या के प्रयास के बाद अपना नज़रिया नास्तिकता से ईश्वर अगम्य है की भावना में बदल दिया। तौभी उसका ख़ालीपन तब तक बना रहा जब तक कि इस्राएल के दौरे पर, उसने यीशु मसीह को एक नई रोशनी में न देखा :

"यह तब तक था जब तक कि मैं 'होली लैण्ड' में बी.बी.सी. के लिए नया नियम पर तीन टेलीविज़न कार्यक्रम बनाने के उद्देश्य से नहीं पहुंचा..... यीशु मसीह के जन्म, सेवकाई और क्रूस पर चढ़ाए जाने के विषय एक वास्तविकता ने मुझे जकड़ लिया..... मैं आश्वस्त हुआ कि वास्तव में कोई व्यक्ति था, यीशु, जो परमेश्वर भी था....." | जीसस री डिस्कवर्ड, बंगे, सफलोक, यू.के. : फॉन्टेना बुक्स, 1969, पृष्ठ 8 (प्राक्कथन)

अन्ततः इस महान् अंग्रेज़ पत्रकार ने पाया कि इतिहास का यीशु वर्तमान का यीशु भी है। और उसने उसके जीवन के ख़ालीपन को भर दिया। मगरिज़ ने यीशु मसीह के साथ सम्बन्ध जोड़ने की ओर कदम बढ़ा दिया।

निमंत्रण

जॉश मेकडॉवेल ने जब तक यह न जान लिया कि यीशु मसीह हमें अपने साथ एक सम्बन्ध बनाने का निमंत्रण देता है, वह सोचता था कि मसीहियत सिर्फ़ एक और धर्म मात्र है। लेकिन यीशु यह स्पष्ट करता है कि हर कोई उसका आमंत्रण स्वीकार नहीं करता। आइए, हमारे लिए सृष्टिकर्त्ता की जो योजना है उस पर नज़र डालें।

बाइबिल हमें बताती है कि सारी सृष्टि की रचना हमें ध्यान में रखकर की गई। वास्तव में पौलुस हमें बताता है कि परमेश्वर इससे पहले सृष्टि की रचना करता, उसने हमारे लिए योजना बनाई :

"जैसा उसने हमें जगत की उत्पत्ति से पहले, चुन लिया, कि हम उसके निकट प्रेम में पवित्र और निर्दोष हों। और अपनी इच्छा की सुमति के अनुसार हमें अपने लिए पहले से ठहराया, कि यीशु मसीह के द्वारा हम उसके लेपालक पुत्र हों" | इफिसियों 1:4–5, द मैसेज

उत्पत्ति से लेकर प्रकाशितवाक्य तक परम प्रधान विषय है कि हम अपने सृष्टिकर्त्ता के साथ अनन्त कालीन सम्बन्ध के लिए बनाए गए थे, और यह कि वह हमसे बिना किसी शर्त के प्रेम करता है। पौलुस बताता है कि यही वह कारण है जिसके लिए यीशु ने परमेश्वर के रूप में अपने प्रतिष्ठित स्थान को छोड़ दिया और क्रूस पर हमारे लिए अपनी जान दे दी।

"जिसने परमेश्वर के स्वरूप में होकर भी परमेश्वर के तुल्य होने को अपने वश में रखने की वस्तु न समझा। वरन् अपने आप को ऐसा शून्य कर दिया, और दास का स्वरूप धारण किया, और मनुष्य की समानता में हो गया। और मनुष्य के रूप में प्रगट होकर अपने आप को दीन किया, और यहां तक आज्ञाकारी रहा, कि मृत्यु, हां, क्रूस की मृत्यु भी सह ली" | फिलिप्पियों 2:6–8

लेकिन एक मिनट रुकें। परमेश्वर हमारे लिए उस सब मुसीबत और दर्द को सहेगा ? यीशु इस गम्भीर प्रश्न का उत्तर देता है,

"क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए" | यूहन्ना 3:16, द मैसेज

यीशु यहां पर परमेश्वर के प्रेम और क्षमा के हमारे योग्य होने के बारे में कुछ नहीं कहता। बस वह यही कहता है कि उसने हमसे इतना अधिक प्रेम किया कि उसने अपने बेटे को हमारे लिए मरने को भेज दिया। यह धर्म के चेहरे पर मानो धूल फेंक देता है। धर्म हमें हमेशा परमेश्वर की ओर पहुंचने के रास्तों की प्राप्ति के लिए बढ़ाता है। क्रूस परमेश्वर के यह कहने का एक तरीका है कि "मैं तुम से प्रेम करता हूं और मैं तुम्हें क्षमा करने का इच्छुक हूं..... तब भी जबकि तुम इसके योग्य नहीं"।

क्षमा के योग्य न होने पर भी क्षमा

यह मानवीय स्वभाव है कि हम निशाना बना लिए जाते हैं। जब कोई हमें चोट पहुंचाता है या हमें दुखी करता है तो क्रोध आना स्वाभाविक है। हालांकि हमने परमेश्वर को चोट पहुंचाई तब भी यीशु मसीह हमें क्षमा का निमंत्रण देता है। परमेश्वर और मनुष्यों के बीच में महान अन्तरों में से यह एक अन्तर है, क्षमा के लायक न होने पर भी सम्पूर्ण रूप से क्षमा कर देने की योग्यता।

विक्टर ह्यूगो की सर्वोत्कृष्ट कृति, "लेस मिज़रेबल" में मुख्य पात्र फ्रान्सीसी पुरुष जीन वेल्जिन, क़ैद की अवधि पूरी होने से पहले पैरोल पर 19 वर्ष के बाद छोड़ा जाता है। वह जहां कहीं भी जाता है समाज से निकाले हुए व्यक्ति की तरह उससे बर्ताव होता है। ऐसे समय में एक दयालु पुरुष, डिग्नी के बिशप उसे स्वीकार कर लेते हैं और उसके साथ सम्मानजनक व्यवहार करते हैं।

मेहनत–मशक्कत और कठोर जीवन की कड़वाहट और अपना पेट भरने की परेशानियों से तंग आकर वेल्जिन बिशप के यहां से चांदी के बर्तन चुराता है और उनकी मेहरबानियों का शुक्रिया अदा किये बिना चला जाता है। भाग्य की एक करवट के तहत वेल्जिन पुलिस द्वारा पकड़कर हिरासत में ले लिया जाता है। बिशप इस न पछताने वाले व्यक्ति की पहचान करने को लाए जाते हैं।

एक दिल को छू लेने वाले दृश्य में, जब बिशप से पूछा जाता है कि क्या जीन वेल्जिन ने उनकी चांदी चुराई थी। वह दयालु बिशप तब पुलिस को यह बताते हुए उत्तर देते हैं कि वह चांदी का सामान उन्होंने वेल्जिन को दिया था और उसकी आशा के विपरीत वे उसे दो मोमबत्ती रखने के स्टैन्ड भी देते हैं, जिसने वेल्जिन को झकझोर दिया।

बिशप की वह अविश्वसनीय करुणा और क्षमा ने वेल्जिन पर कुछ ऐसा असर डाला कि उसने एक नये सिरे से जीवन को शुरू करने का फैसला कर लिया।

यह मर्मस्पर्शी कहानी उस महान् अनुग्रह और क्षमा की एक झलक है जो परमेश्वर हम पर बरसाता है कि जब उसने अपने एकलौते बेटे को हमारे पापों और हमारे विद्रोह के लिए मरने को भेज दिया। प्रेरित पौलुस खुलासा करता है,

"किसी धर्मीजन के लिये कोई मरे, यह तो दुर्लभ है, परन्तु क्या जाने किसी भले मनुष्य के लिए कोई मरने का भी हियाव करे। परन्तु परमेश्वर हम पर अपने प्रेम की भलाई इस रीति से प्रगट करता है, कि जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिये मरा"। रोमियों 5:7–8, द मैसेज

यीशु इस प्रेम और क्षमा को समझाने के लिए दृष्टान्त के रूप में एक विद्रोही बेटे की कहानी बताता है, जो कि अपना घरबार छोड़ना चाहता था और अपने उत्तराधिकार की सम्पत्ति का हिस्सा पहले चाहता था। अतः पिता ने अपने बेटे की विनती को स्वीकार कर लिया।

लेकिन बेटे के जीवन में सब बातें बुरी घटीं। रंगरलियों में अपने सारे पैसे को फ़िजूल उड़ा देने के बाद उसे सूअरों के बाड़े में काम करना पड़ा। जल्द ही यह हुआ कि जब वह बहुत भूखा होता तो सुअरों का खाना खाना शुरू कर देता । आख़िर जब उसे होश आया तो उसने महसूस किया कि उसने अपने प्रिय पिता के साथ एक शानदार ज़िन्दगी को छोड़ दिया है। अतः उसने अपना सामान बांधा और अपने घर की ओर चल दिया। यीशु उसके पिता की प्रतिक्रिया बताते हैं,

".....वह अभी दूर ही था, कि उसके पिता ने उसे देखकर तरस खाया, और दौड़कर उसे गले लगाया, और बहुत चूमा। पुत्र ने उस से कहा; पिता जी, मैंने स्वर्ग के विरोध में और तेरी दृष्टि में पाप किया है; और अब इस योग्य नहीं रहा कि तेरा पुत्र कहलाऊं। परन्तु पिता ने अपने दासों से कहा; (लेकिन पिता सुन नहीं रहा) झट अच्छे से अच्छा वस्त्र निकालकर उसे पहनाओ, और उसके हाथ में अंगूठी..... हम खाएं और आनन्द मनाएं। क्योंकि मेरा यह पुत्र मर गया था, फिर जी गया है : खो गया था, अब मिल गया है !" लूका 14:11–24, द मैसेज

कीचड़ से लथपथ कपड़े बदलने और साफ़ होने से पहले ही पिता ने अपने पुत्र को गले लगाया। परमेश्वर हम तक पहुंचता है, तब भी जब हम उसके योग्य नहीं होते। वास्तव में हम में से कोई भी उसकी क्षमा के योग्य नहीं। यशायाह हमें बताता है कि हम सभी परमेश्वर के रास्तों से भटक गए हैं :

"हम तो सब के सब भेड़ों की नाईं भटक गए थे; हम में से हर एक ने अपना–अपना मार्ग लिया; और यहोवा ने हम सभों के अधर्म का बोझ उसी पर लाद दिया"। यशायाह 53:6

यीशु मसीह जो निमंत्रण देता है, वह विशिष्ट है। यही वह तथ्य है जो मसीहियत को धर्म से अलग करता है। मसीही धर्म विज्ञानी आर.सी. स्प्राउल इस अत्यन्त विशिष्ट निमंत्रण के बारे में लिखता है जिसे करने के योग्य केवल यीशु मसीह है,

"मूसा व्यवस्था पर ध्यान लगा सकते थे, मुहम्मद तलवार लहरा सकते थे; बुद्ध वैयक्तिक सलाह दे सकते थे; कनफ़्यूशियस सूक्तियों की पेशकश कर सकते थे, लेकिन इन व्यक्तियों में से कोई भी व्यक्ति संसार के पापों से प्रायश्चित के निमंत्रण के योग्य नहीं था..... केवल यीशु ही इस असीम समर्पण और सेवा के योग्य है"। केस फॉर फेथ 145

चुनाव की स्वतंत्रता

यीशु के इस दृष्टान्त में यह जानना बड़ा रुचिकर है कि पिता ने अपने बेटे को गहराई से प्रेम किया, फिर भी वह कैसे रहना चाहता था, इसका चुनाव करने की स्वतंत्रता उसने अपने बेटे को दे रखी थी। लेकिन बेटा कष्ट में रहा और उसने उन बहुत सारी आशीषों को खो दिया जो उसे मिल सकती थीं यदि उसने विद्रोह नहीं किया होता।

यीशु उस स्वतंत्रता का चित्र उपस्थित कर रहा है जो परमेश्वर हम में से हर एक को देता है। हम एक स्वकेन्द्रित जीवन जीने का चुनाव कर सकते हैं अथवा हम उसकी इच्छा के साथ अपनी इच्छा को मिला कर जीने का चुनाव कर सकते हैं। लेकिन हमारे प्रत्येक चुनाव के परिणाम भी निश्चित हैं। दुख की बात यह है कि हम में से बहुत से उस ज़िद्दी बेटे के समान हैं जिसने कि तब तक इन्तज़ार किया जब तक कि उसकी दुनिया अपने पिता के पास वापस आने से पहले ही उजड़ न गई।

परमेश्वर हमें रोबोट की तरह बना सकता था ताकि हमारा डी एन ए उससे प्रेम करने के लिए ही सधा रहता, लेकिन वह चाहता था कि हम उसे प्रेम करना स्वयं चुनें। कुछ इस मुद्दे पर यही कहेंगे कि वे परमेश्वर में भरोसा रखेंगे अगर वह अपने आप को उन्हें दिखाए। डॉ. जे.पी. मोरलैण्ड प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं,

"परमेश्वर अपने अस्तित्व को काफ़ी हद तक ज़ाहिर रखने के बीच एक नाज़ुक सन्तुलन बनाए रखता है कि लोग जानें कि वह वहां है और तौभी अपनी उपस्थिति को इतनी हद तक छुपाए रखता है कि उस प्रकार के लोग, जो उसको नज़रअन्दाज़ करने का चुनाव करना चाहते हैं, वे ऐसा कर सकते हैं। इस तरह से हम अपनी नियति के चुनाव की स्वतंत्रता के लिए किसी भी प्रकार की रोक–टोक से मुक्त हैं" | केस फॉर फेथ 189

हम निश्चय ही अपनी स्वतंत्रता की क़द्र करते हैं; तौभी हमारी स्वतंत्रता अक्सर हमें ख़ुद में खोये रहने का दास बना लेती है। जबकि यह एक अत्याचारी स्वामी है, फिर भी यह व्यक्तिगत चुनाव की बात है। यीशु मसीह हमें अपने स्वार्थों के बन्धन से निकलने का निमंत्रण देता है, वह हमें स्वतंत्र होने का निमंत्रण देता है, लेकिन इसके लिए हमें अपने जीवनों में उसकी उपस्थिति का चुनाव करना है।

विश्वास का चुनाव

अतः परमेश्वर का यह उदार निमंत्रण हमारे चुनाव की बात है। वह ख़ुद को चुनने के लिए हम पर दबाव नहीं डालेगा। परन्तु यीशु मसीह हमसे हमारे निर्णय का परिणाम ध्यान –पूर्वक सुनने एवं समझने की विनती करता है,

"मैं तुम से सच–सच कहता हूं, जो मेरा वचन सुनकर मेरे भेजनेवाले की प्रतीति करता है, अनन्त जीवन उसका है, और उस पर दण्ड की आज्ञा नहीं होती" | यूहन्ना 5:24

हमने देखा है कि प्रमाण के ऊपर गम्भीर रूप से विचार करने के बाद अनगिनत नास्तिकों ने यीशु के विषय में अपनी राय बदल दी। जॉश मेकडॉवेल उन्हीं भूतपूर्व नास्तिकों में से एक हैं जो इस ज़बरदस्त प्रमाण को जानने के बाद आश्चर्यचकित रह गए। मसीहियत के खिलाफ़ वर्षों नास्तिकवादी दृष्टिकोण रखने वाला जॉश इस बात का वर्णन करता है कि कैसे उसके दिमाग, उसकी इच्छा और अन्ततः उसके हृदय पर यीशु मसीह का अधिकार हो गया।

"मेरे दिमाग़ ने तो मुझे बताया कि यह सब सच था पर मेरी मर्ज़ी मुझे दूसरी दिशा में खींच रही थी। मुझे ज्ञात हुआ कि मसीही होना ख़ुद के अहम का बिखर जाना था। यीशु मसीह ने उस पर भरोसा करने के लिए मेरी इच्छा को सीधी चुनौती दी। मुझे इसकी व्याख्या करने दें। 'देख, मैं द्वार पर खड़ा हुआ खटखटाता हूं; यदि कोई मेरा शब्द सुनकर द्वार खोलेगा तो मैं उसके पास भीतर आऊंगा' | प्रकाशित वाक्य 3:20

अतः मेरा दिमाग़ मुझे बता रहा था कि मसीहियत सच्ची थी और मेरी मर्ज़ी मुझे कहीं ओर ले जा रही थी..... लेकिन जब मेरी सोच खुली..... विश्वविद्यालय में अपने दूसरे साल के दौरान मैं मसीही हो गया" | एविड वॉल्यूम 1, 365

बाइबिल बताती है कि परमेश्वर विश्वास की क़द्र करता है, क्योंकि यह एक खोजी हृदय की प्रतिक्रिया है, न कि कोई बुद्धिजीवी चुनाव। इब्रानियों का लेखक व्याख्या करता है कि, विश्वास क्या है ?

"अब विश्वास आशा की हुई वस्तुओं का निश्चय, और अनदेखी वस्तुओं का प्रमाण है" | इब्रानियों 11:1

दूसरे शब्दों में विश्वास आशा पर आधारित है। बाइबिल के अनुसार जो सच्चाई के साथ परमेश्वर की खोज में रहते हैं वे उसे पाएंगे। जो कुछ भी हो, अगर हम परमेश्वर की खोज में नहीं हैं तो हमें विश्वास करने का कारण मिल जाएगा। महान् फ्रांसीसी वैज्ञानिक और दार्शनिक पास्कल इसे कुछ इस तरह से प्रस्तुत करता है,

"परमेश्वर का अस्तित्व और उसका उपहार हमें विवश करने योग्य है, परन्तु वे जो इस बात पर ज़ोर देते हैं कि उन्हें उसकी आवश्यकता नहीं है वे हमेशा इस निमंत्रण को ठुकराने का रास्ता निकाल लेंगे"| एविड वॉल्यूम 1, 12

चक कोल्सन ने व्हाइट हाउस में राष्ट्रपति निक्सन के सहायक के रूप में अपनी स्थिति बना ली थी। एक प्रशिक्षित वकील की हैसियत से वह निक्सन प्रशासन के एक "कड़े व्यक्ति" के रूप में जाना जाता था। फिर यह सब 'वॉटरगेट' साज़िश की गुत्थी को सुलझाने के साथ शुरू हुआ।

कोल्सन ने अपने ही दिल के ख़ालीपन को मालूम किया और एक मित्र के प्रोत्साहन पर उसने सी.एस. लुइस की 'मियर क्रिश्चियनेटी' पढ़ना शुरू की। यीशु मसीह के प्रति विश्वास में आने के लुइस के अपने कारणों को पढ़ने के बाद जल्द ही कोल्सन ने पाया कि वह यही खोज रहा था। वह स्मरण करता है,

"मैं समझ गया कि समय मेरे लिये आ गया था..... क्या बिना किसी पूर्वाग्रहों के मैं यीशु मसीह को अपने जीवन का प्रभु स्वीकार कर लेने को तैयार था ? वह मेरे आगे एक द्वार की तरह था। उसके चारों तरफ़ घूमने का और कोई रास्ता ही नहीं था। मैं उससे गुज़रूंगा या फिर बाहर ही रह जाऊंगा। 'हो सकता है' या 'मुझे और समय की ज़रूरत है' जैसे वाक्य मेरी ही खिल्ली उड़ा रहे थे" | बॉर्न 129

कोल्सन को शान्ति की ज़रूरत थी, और वह जानता था कि विश्वास ही उसे हासिल करने का एक तरीका था। प्रेरित पौलुस स्पष्ट करता है कि विश्वास ही परमेश्वर के साथ शान्ति की कुंजी है।

"सो जब हम विश्वास से धर्मी ठहरे, तो अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर से मेल रखें। जिसके द्वारा विश्वास के कारण उस अनुग्रह तक, जिसमें हम बने हैं, हमारी पहुंच भी हुई" | रोमियों 5:1–2

भूतपूर्व नास्तिक ली स्ट्रॉबेल अपनी किताब, 'द केस फॉर फेथ' में बताता है कि विश्वास और सन्देह का अस्तित्व एक साथ होता है। हम में से कोई भी किसी भी चीज़ पर पूरी–पूरी तरह विश्वास नहीं करता। हम हवाई जहाज़ों में उड़ते हैं, जिनमें ख़राबी हो सकती थी, लेकिन उनके सुरक्षित होने के प्रति हमारा विश्वास इतना पर्याप्त होता है जो हमें जोखिम उठाने के लिए तैयार करता है।

लेकिन कुछ विश्वास का क़दम उठाने को राज़ी नहीं हैं। शायद वे किसी मसीही द्वारा नाराज़ कर दिये गये हैं या परमेश्वर से उन्हें इस कारण से नाराज़गी है कि जो कुछ भी उन्हें प्राप्त हुआ, वह ठीक नहीं था। हम मुख्य कारणों में से कुछ पर नज़र डालेंगे जो यीशु पर विश्वास न करने के सम्बन्ध में लोगों के पास हैं।

विश्वास के प्रति रुकावटें

चार शुरुआती रुकावटें हमें यीशु के पास आने से रोकती हैं :

1. वे विश्वास नहीं करते कि बाइबिल परमेश्वर का वचन है।
2. नैतिक रुकावट।
3. घमण्ड।
4. वे परमेश्वर की भलाई पर सन्देह करते हैं।

परमेश्वर के वचन पर सवाल उठाए गए

हम अनेक अनीश्वरवादियों को देख चुके हैं, जिन्होंने बुनियादी तौर पर पहले तो बाइबिल पर सन्देह किया, परन्तु फिर उन्होंने अपनी राय बदल दी, जब उन्होंने प्रमाण की जांच कर ली। वास्तव में, वे लोग जो बाइबिल के परमेश्वर का वचन होने में सन्देह करते हैं, उनमें से अधिकांश ने न तो कभी इसे पढ़ा है अथवा उनका दृष्टिकोण उनकी व्यक्तिगत खोजबीन पर आधारित होता है।

अगर यह मुद्दा आपको परेशान कर रहा है तो और बहुत–सी अच्छी किताबें हैं जो आपको प्रमाण की खोजबीन में मदद करेंगी।

कुछ लोग जो बाइबिल में सन्देह करते हैं, वे ऐसा इसलिए करते हैं क्योंकि बहुत सारे भिन्न–भिन्न अनुवाद हैं और उन्हें आश्चर्य होता है कि कैसे परमेश्वर हर एक को प्रेरित कर सका। ज़्यादातर नए अनुवाद मौलिक विचार या शब्दों को आधुनिक भाषा में समझाने का प्रयास मात्र हैं। प्रायः वे बहुत सही हैं, और बड़ी स्पष्टता से यह खुलासा करते हैं कि मौलिक प्रेरित लेखक ने क्या कहा। पौलुस प्रेरित ने तीमुथियुस को बताया,

"हर एक पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है, और उपदेश, और समझाने, और सुधारने, और धर्म की शिक्षा के लिये लाभदायक है" | 2 तीमुथियुस 3:16

बाइबिल समय की परीक्षा और अनेकों विरोधों के बावजूद स्थिर रही। इसकी विश्वसनीयता प्रमाणित हो चुकी है। जिसका अर्थ यह है कि हमारे लिए परमेश्वर के लिखित और जीवित वचन के रूप में इसके सन्देश पर हम भरोसा कर सकते हैं। हज़ारों साल पहले लिखे गए इसके शब्द आज भी जीवनों को बदल रहे हैं। टोज़र चेताता है,

"अगर आप प्रभु के..... पीछे–पीछे जाते हैं, एकदम बाइबिल खोलकर यह आशा करते हुए कि वह आप से बात करे..... तो यह किसी बात से कहीं ज़्यादा है; यह आवाज़ है, वचन, यही वचन जीवित परमेश्वर का है" | परस्यूट 78

नैतिक रुकावट

बहुत से लोग परमेश्वर और बाइबिल पर सन्देह करना चुन लेते हैं; क्योंकि वे एक अनैतिक जीवन–शैली में लिप्त हैं। वे नाराज़ परमेश्वर का सामना करने के बजाय उससे छुप जाते हैं। वे इस बात को समझने में असफल हो जाते हैं कि परमेश्वर उनके जीवनों में विषय में जानता है, और वह उनसे प्रेम करता है, और उनके प्रत्येक पाप को क्षमा करने के लिए तैयार है।

बाइबिल स्पष्ट रूप से सिखाती है कि हम सभी अपने विचारों और कार्यों में अनैतिक हैं और हमें यीशु की सामर्थ्य के द्वारा नए हो जाने की ज़रूरत है। हमारे विचार भी उसे मालूम हैं। भविष्यवक्ता यिर्मयाह लिखता है,

"मन तो सब वस्तुओं से अधिक धोखा देने वाला होता है, उसमें असाध्य रोग लगा है, उसका भेद कौन समझ सकता है ? मैं यहोवा मन को खोजता और हृदय को जांचता हूं....." | यिर्मयाह 17:9, 10अ

एक मनुष्य जिसने इस दृष्टिकोण की मिसाल दी वह ऐल्डस हक्सले था जो डार्विन के विकासवाद के सिद्धान्त की वकालत करने वाला बहुचर्चित वकील था। हक्सले ने परमेश्वर के बगैर एक सृष्टि में विश्वास के लिए अपने व्यक्तिगत कारणों को स्वीकार किया है,

"मेरे पास संसार द्वारा कोई अर्थ रखने की चाहत न करने के कारण थे, इस तरह से मान लिया कि कोई नहीं था..... मेरे लिये अर्थहीनता का दर्शन मूल रूप से यौन सम्बन्धी और राजनैतिक रिहाई का एक उपकरण है"।

वास्तव में प्रसिद्ध दार्शनिक और लेखक रवि ज़कर्याह लिखता है कि नैतिक रुकावट परमेश्वर को ठुकरा देने का निहित कारण है।

"एक व्यक्ति परमेश्वर को न तो बौद्धिक मांगों के कारण और न ही प्रमाण की कमी के कारण ठुकराता है। एक व्यक्ति परमेश्वर को नैतिक रुकावट के कारण ठुकरा देता है, जो उसके लिए परमेश्वर की आवश्यकता को स्वीकारना नकार देती है"।

हठी बेटे के विषय में यीशु की कहानी दर्शाती है कि परमेश्वर हमारे ग़लत चुनावों के बावजूद भी हम से प्रेम करता है। उसका पिता कह सकता था, "पहले साफ़–सुथरे हो जाओ और कपड़े बदल लो..... और तब मैं तुमसे प्रेम करूंगा और तुम्हें क्षमा करूंगा"। लेकिन उसने अपने बेटे को स्वीकारा और अपनी प्रेम भरी बाहों में उसके गन्दे, बदबूदार शरीर को भर लिया। यशायाह हमें बताता है कि ऐसा ही परमेश्वर के साथ भी है; वह साफ़ कर देता है, न कि हम स्वयं।

"यहोवा कहता है, 'आओ हम आपस
में वाद–विवाद करें :' तुम्हारे पाप चाहे
लाल रंग के हों, तौभी वे हिम की
नाईं उजले हो जाएंगे"। यशायाह 1:18

घमण्ड

घमण्ड लोगों को यीशु के पास आने से रोकने की एक दूसरी रुकावट है। घमण्डी लोग नहीं सोचते कि उन्हें परमेश्वर की क्षमा की ज़रूरत है। घमण्ड हर एक बात और हर एक चीज़..... यहां तक कि परमेश्वर भी से हटकर स्वयं को महिमामण्डित करने की ढिठाई है। नैन्सी ली डिमॉस घमण्डी लोगों की अनेक विशेषताओं को बताती है। ब्रोकेननेस 88–90

"घमण्डी लोगों की दृष्टि दूसरों की असफलताओं पर लगी रहती हैं और वे उनकी कमियों को बताने के लिए तैयार रहते हैं"।

"घमण्डी लोगों में आलोचना करने और ग़लतियां निकालने की भावना होती है। वे हर एक की कमियों को मानो किसी सूक्ष्मदर्शी यन्त्र से देखते हैं, लेकिन खुद की ग़लतियों को दूरबीन से देखते हैं"।

"घमण्डी लोग स्वधार्मिक होते हैं; वे स्वयं को बड़ा ऊंचा सोचते हैं और दूसरों को नीची नज़र से देखते हैं"।

डिमॉस घमण्ड से भरे हुए जीवन की 32 अन्य विशेषताओं की सूची देती हैं जिनमें से अधिकांश प्रतिदिन के जीवन में देखी जा सकती हैं जब हम दूसरों के साथ सम्पर्क में आते हैं। यहां तक कि वे लोग जो अच्छा जीवन जीते हुए प्रतीत होते हैं वे भी घमण्ड से संक्रमित हो सकते हैं। सी.एस. लुइस समझाते हैं,

"एक ऐसा दुर्गुण है जिससे इस संसार का कोई भी व्यक्ति आज़ाद नहीं..... वह दुर्गुण जिसके बारे में मैं बात कर रहा हूं, वह है 'घमण्ड' या 'आत्माहंकार' (ख़ुद को बढ़ – चढ़कर समझना)..... । घमण्ड हर एक दूसरे दुर्गुण की तरफ ले जाता है। यह पूरी तरह से परमेश्वर के विरोध की मानसिक अवस्था है..... यह घमण्ड ही है जो कि संसार के प्रारम्भ से ही प्रत्येक राष्ट्र और प्रत्येक परिवार के कष्टों का कारक रहा है"। बॉर्न 112, 113

वॉटरगेट काण्ड में दोषी पाए जाने के बाद चक कोल्सन को अपने घमण्ड के साथ संघर्ष का सामना करना पड़ा :

"मैं अपने ही बारे में सोचता रहा था। मैंने यह किया और वह किया, मैंने इस लक्ष्य को प्राप्त कर लिया, मैं सफल हुआ और मैंने कभी भी परमेश्वर को इसका श्रेय नहीं दिया, कभी भी मैंने उसके उपहारों के लिए उसे धन्यवाद नहीं दिया।

मैंने कभी भी मुझसे ज़्यादा किसी और की सर्वश्रेष्ठता के विषय में नहीं सोचा और अगर परमेश्वर की असीम सामर्थ्य के विषय में कुछ पलों के लिए कभी मैंने सोचा भी हो, तो मैंने उसे अपने जीवन से नहीं जोड़ा था"। बॉर्न 114

शायद, कोल्सन की तरह ही आपने सृष्टिकर्त्ता की अविश्वसनीय सामर्थ्य और बुद्धि का कम मूल्यांकन किया हो, यहां तक कि अपने आप को किसी हद तक उससे ऊपर रखा हो। परमेश्वर यशायाह के द्वारा हम सबसे बात करता है,

"क्योंकि यहोवा कहता है, मेरे विचार और तुम्हारे विचार एक समान नहीं हैं, न तुम्हारी गति और मेरी गति एक सी है। क्योंकि मेरी और तुम्हारी गति में और मेरे और तुम्हारे सोच विचारों में, आकाश और पृथ्वी का अन्तर है"। यशायाह 55:8,9

लुइस निष्कर्ष निकालता है,

"जब तक आप घमण्ड से भरे हैं, आप परमेश्वर को नहीं जान सकते। एक घमण्डी व्यक्ति हमेशा चीज़ों और लोगों को तिरस्कार की दृष्टि से देख रहा होता है, और निःसन्देह ही जब तक आप नीचे की ओर देख रहे होते हैं तो आप कोई चीज़, जो आप से ऊपर है, उसे नहीं देख सकते"। मियर 124

जब हम अपने सृष्टिकर्त्ता की महानता के बारे में सोचते हैं, और उस तथ्य के बारे में कि हमारे सूर्य के समान अरबों–खरबों सितारों की रचना है, तो स्वीकार कर लेना कि यह उसके लिए केवल उसकी "उंगलियों का कार्य" है, तो घमण्ड का कोई अर्थ ही नहीं रह जाता। तथापि घमण्ड बहुत से लोगों को परमेश्वर की क्षमा के मुफ़्त उपहार को स्वीकार करने से वंचित कर देता है।

परमेश्वर की भलाई पर सन्देह

हालांकि हम इस बात को नहीं समझ सकते कि हम सबके जीवन में ऐसे समय आए हैं जब हमने परमेश्वर की भलाई के प्रति सन्देह किया। परमेश्वर की भलाई के विषय में सन्देह करने के दो सर्वाधिक सामान्य कारण हैं, जो निर्दोष लोगों की अपने जीवन में तकलीफ उठाने और मृत्यु के बाद नरक में अनन्त की पीड़ा भोगने के प्रश्न हैं।

निर्दोष की पीड़ा

हम अक्सर पीड़ाओं के लिए परमेश्वर को दोषी ठहराते हैं हम तर्क देते हैं कि "इसके बावजूद भी..... अगर परमेश्वर भला है तो फिर संसार में इतनी पीड़ाएं क्यों हैं, परमेश्वर क्यों नहीं इस संसार को बगैर आतंकवाद, युद्ध, बीमारी और मृत्यु के बना सका"। जवाब बड़ा आसान सा है कि वह ऐसा कर सकता था, लेकिन यह उसकी योजना नहीं थी।

बाइबिल के अनुसार, हमारा कष्ट उठाना हमारे स्वयं के नियमों के अनुसार जीवन जीने के मनुष्य द्वारा लिए गए निर्णय का परिणाम है। यह उस प्रथम मनुष्य, आदम से शुरू हुआ। यह सिर्फ़ "उस आख़िरी आदम", यीशु मसीह के द्वारा ही होगा कि पाप, दुख–तकलीफ़ और मौत अन्तिम रूप में हटा दिए जाएंगे।

विलियम लेन क्रेग हमें इसकी झलक दिखाता है कि कैसे दुख–तकलीफ़ पर हमारे सवालों का जवाब स्वर्ग में दिया जाएगा :

"न्याय के दिन परमेश्वर के सिंहासन के सामने तीन आदमी भीड़ में से खड़े हुए। हर एक के पास परमेश्वर से अलगाव का कारण था। 'मैंने जो जुर्म नहीं किया था उसके लिए मुझे फांसी दी गई' एक आदमी ने कटुता से शिकायत की। दूसरे ने कहा, 'मैं ऐसी बीमारी से मर गया जो महीनों, मेरे शरीर और आत्मा को टूटा हुआ छोड़कर, खिंचती चली गई'। 'मेरा बेटा भरी–पूरी उम्र में मर गया, शराब पिए हुए व्यक्ति ने अपना नियंत्रण खो दिया और उसे कुचल दिया' तीसरा बुदबुदाया।

हर एक नाराज़ था और परमेश्वर को भला–बुरा कहने को उत्सुक था; लेकिन जब वे सिंहासन तक पहुंचे और उन्होंने अपने न्यायकर्त्ता के हाथों और पैरों में कीलों से ठुका हुआ और उसके एक तरफ घायल शरीर को देखा तो उनके मुंह रुक गए। वे ख़ामोशी से अपने घुटनों पर वहीं अपने बचाने वाले के सम्मुख गिर पड़े" | नो क्वाय 152

हम कभी भी उस दर्द और दुख – तकलीफ को नहीं समझ सकेंगे जो इस संसार में है, जब तक कि हम हर एक चीज़ को अपने भले और प्रेमी परमेश्वर के दृष्टिकोण से न देखें। तब तक के लिए हमें उसकी भलाई पर भरोसा रखना चाहिए।

अनन्त पीड़ा

बहुत से लोग यह प्रश्न पूछते हैं कि "भला और प्रेमी परमेश्वर लोगों को नरक का दण्ड क्यों देता है"। यीशु ने वास्तव में स्वर्ग के बजाय नरक के विषय में ज़्यादा बार कहा। बाइबिल नरक का चित्रण परमेश्वर के साथ सम्बन्ध की सम्पूर्ण रिक्तता के रूप में करती है, जिसका नतीजा सम्पूर्ण अलगाव और अकेलापन है। अपनी पुस्तक, 'मैं मसीही क्यों नहीं हूं' में बर्टेन्ड रसेल यीशु की वास्तविक नरक की शिक्षा की कड़ी आलोचना करते हैं,

"यीशु के नैतिक चरित्र के विषय में एक बहुत गम्भीर खराबी जो मेरे मस्तिष्क में है, वह यह है कि उन्होंने नरक में विश्वास किया। मैं खुद भी यह महसूस नहीं करता कि कोई भी व्यक्ति जो वास्तव में गहराई से उदार हृदय वाला है वह कभी न ख़त्म होने वाली सज़ा में यक़ीन रखेगा। यीशु ने..... कभी न ख़त्म होने वाली सज़ा में यक़ीन रखा"। पृष्ठ 17

बाइबिल हमें बताती है कि हमारे पापों ने हमें परमेश्वर की पवित्रता से अलग कर दिया है और हम सब ज़्यादा से ज़्यादा दण्ड के अपराधी हैं..... जो परमेश्वर की उपस्थिति से अनन्तकाल का अलगाव है। पौलुस हमें रोमियों की पुस्तक में बताता है,

"परमेश्वर का क्रोध तो उन लोगों की सब अभक्ति और अधर्म पर स्वर्ग से प्रगट होता है, जो सत्य को अधर्म से दबाए रखते हैं" | रोमियों 1:18

बाइबिल सिखाती है कि पाप के लिए परमेश्वर का न्याय सन्तुष्ट होना चाहिए। भरपाई पूरी–पूरी होनी चाहिए क्योंकि परमेश्वर का सिद्ध न्याय इसकी मांग करता है। अगर परमेश्वर ने हमें उसके पवित्र न्याय से सन्तुष्ट हुए बिना क्षमा कर दिया होता, तो वह परमेश्वर नहीं होता और उसका खुद का चरित्र अनिश्चित रहा होता।

टोज़र चेतावनी देता है कि बहुत से लोग पाप की गम्भीरता को नहीं स्वीकारते और परमेश्वर के सिद्ध न्याय को नहीं समझते।

"..... लेकिन परमेश्वर का न्याय सदैव पापी के विरुद्ध अत्यन्त गम्भीरता से खड़ा होता है। यह धुंधली और सारहीन आशा कि परमेश्वर अधर्मियों को दण्ड देने के प्रति कृपालु है, लाखों के विवेक के लिए एक घातक नशीली सी नींद लाने वाली दवा हो गई है" | नॉलेज 89

इस सवाल का जवाब देते हुए कि कैसे प्रेमी परमेश्वर एक अनन्त नरक का निर्माण कर सका, नया नियम के विद्वान डॉ. ए. आर. कारसन कारण बताते हैं,

"..... नरक वह जगह नहीं है जहां लोग भेज दिए जाते हैं क्योंकि वे काफ़ी अच्छे लोग थे, लेकिन बस उन्होंने सही तौर पर विश्वास नहीं किया। वे वहां भेज दिए जाते हैं..... क्योंकि वे अपने 'बनाने वाले' का खुला विरोध करते हैं और सृष्टि के केन्द्र (प्रमुख) होना चाहते हैं" | केस फॉर क्राइस्ट 165

बहुत से अभी भी परमेश्वर के न्याय पर वाद–विवाद करते हैं, और यह आशा करते हैं कि वह अपना विचार बदल देगा और पाप को बिना उसके परिणामों के क्षमा कर देगा। 'मियर क्रिश्चियैनिटी' में लुइस ऐसे लोगों को समझाता है जो परमेश्वर के साथ बहस करते हैं,

"लेकिन परमेश्वर के साथ असहमत होने के बारे में कठिनाई है। वही तो वह स्रोत है जहां से आपकी सारी तर्क–विवेचन की शक्ति आती है। आप सही हैं और वह ग़लत, यह तो ऐसी बात है जैसे कि एक सोता अपने उद्गम से ज़्यादा ऊंचाई पर उठ जाए। जब आप

उसके (परमेश्वर के) विरोध में बहस कर रहे हों, तो वास्तव में आप उस शक्ति के ख़िलाफ बहस कर रहे होते हैं जो आपको किसी भी प्रकार से बहस करने के योग्य बनाती है....."।

परमेश्वर कितना अच्छा है ? परमेश्वर की अच्छाई यहां तक नापी जा सकती है कि वह हमारी निराशाजनक दुर्दशा से बचाने के लिए अपने ही बेटे को क्रूस के ऊपर भेज देता है। केवल भला परमेश्वर ही अपनी ज़िन्दगी उनके लिए देगा जिनसे वह प्रेम करता है। यह हमें उस अनन्तिम प्रश्न तक ले जाता है :

अगर परमेश्वर के पवित्र न्याय को सन्तुष्ट करने का एक दूसरा रास्ता था तो उसने अपने बेटे को ऐसी दर्द भरी और अपमानपूर्ण मौत की तकलीफ़ उठाने और मरने को क्यों भेजा ?

इसे निजी बनाएं

शायद आपके पास वे प्रश्न या समस्याएं न हों जिन पर हम चर्चा कर चुके हैं, लेकिन कोल्सन की तरह वास्तव में कभी इस पर विचार नहीं किया है कि परमेश्वर की दृष्टि में आप कितने मूल्यवान हैं।

एक जीवन का मूल्य

लेकिन वास्तव में हमारे जीवनों की क्या क़ीमत है ?

दूसरे विश्व युद्ध की चरम सीमा के दौरान यहूदी लोगों को पशुओं की तरह झुण्ड बनाकर जर्मनों द्वारा चलाए जा रहे हत्या शिविरों में जमा किया जा रहा था। यातना भोगे हुए, भूखे और अपमानित पुरुषों – महिलाओं और बच्चों को जर्मन तानाशाह, एडोल्फ़ हिटलर द्वारा इन्सान नहीं समझा गया। जर्मन कारागार के सुरक्षाकर्मियों के सामने उन्हें नंगा कर उनकी क़वायद कराई गई और उनकी नियति गैस चैम्बर थी।

एक चतुर नाज़ी चेक व्यापारी ने इसमें एक खास अवसर देखा। उसने कारण दिया "इन 'बेकार के' यहूदियों को उसके कारख़ाने में काम करने को इस्तेमाल क्यों नहीं किया जाता, जो उन्हें ज़िन्दा रहने के लिए बस थोड़ा–सा गुज़ारे भर का मेहनताना दे देगा ?" और इस प्रकार से ऑस्कर शिन्डलर जर्मन कमान्डरों के साथ यह सौदा तय करना शुरू कर देता है कि वह उन हट्टे–कट्टे यहूदियों को अपने कारख़ाने में नौकर रखेगा और इस प्रकार से वह उन्हें ऑसक्विट्ज़ नज़रबन्दी शिविर में गैस देकर मारने से बचाता है।

समय के साथ ऑस्कर शिन्डलर के हृदय में कुछ विशिष्ट घटित होता है..... अपने यहूदी कर्मचारियों के प्रति उसका प्रेम बढ़ता है और ज़ल्द ही वह इस बात की तरकीब पर काम करना शुरु कर देता है कि कैसे ज़्यादा–ज़्यादा को वह उस गैस चैम्बर से बचा ले। शिन्डलर यहूदी ज़िन्दगियों को बचाने के लिए अधिक से अधिक धन देना शुरु कर देता है और कुछ ही वर्षों में एक लालची, मक्कार मुनाफाखोर से मनुष्य को बचाने वाले के रूप में बदल जाता है।

मूवी 'शिन्डलर्स लिस्ट' के आख़िरी दृश्य में आंखों में आंसू भरे हुए शिन्डलर, और अधिक जीवनों को न बचा पाने की अपनी असफलता पर चिन्तित दिखाई देता है। युद्ध ख़त्म हो चुका है उसके प्रति कृतज्ञ फैक्ट्री कर्मचारी उसके अपने कारखाने से आख़िरी बार विदा लेने से पहले उसका सम्मान करते हैं। जैसे ही वे उसके प्रति अपनी प्रशंसा के प्रतीक को उसे भेंट देते हैं, शिन्डलर उनकी ओर गम्भीर–मुद्रा में देखता है जिन्हें उसने बचाया है, और उसकी आंखें आंसुओं से नम हो जाती हैं।

शिन्डलर गम्भीरता से अपनी सोने की घड़ी की तरफ़ देखता है और उन आंसुओं के बीच, जो उसके गालों से छलछलाकर बहते ही जा रहे हैं, वह बुदबुदाता है – "दो और ज़िन्दगियां..... मैं यह घड़ी बेच सकता था और दो और लोगों को बचा लेता"। तब वह अपनी कार की तरफ देखता है। "दस यहूदी ! मैं यह कार बेच सकता तथा दस और को बचा सकता था"। जज़्बाती और दुखी शिन्डलर टूट जाता है। अपने कृतज्ञ यहूदी कर्मचारियों द्वारा सान्तवना पाकर वे आख़िरी समय में विदा हो जाते हैं।

युद्ध ख़त्म होने तक ऑस्कर शिन्डलर ने 1100 यहूदियों को नाज़ी नज़रबन्दी शिविर से बचा लिया था। आज उसके स्मारक को उन बचे हुए कर्मचारियों और उनके कृतज्ञ परिवारों द्वारा याद किया जाता है और उसे श्रद्धांजलि दी जाती है।

ऑस्कर शिन्डलर की यह सच्ची कहानी हमारी बहुमूल्यता की झलक है जो हमारा सृष्टिकर्त्ता हम पर लागू करता है। हमारा मूल्य इस बात से निर्धारित किया गया कि परमेश्वर उसके साथ हमारे अनन्त के अलगाव से हमें छुड़ाने के लिए क़ीमत चुकाने को तैयार था। इसकी क़ीमत उसने अपने बेटे की ज़िन्दगी के रूप में चुकाई।

यीशु की मृत्यु आपके और मेरे लिए व्यक्तिगत रूप से हमारी अविश्वसनीय क़ीमत निश्चित करती है। कोई भी जो वास्तव में क्रूस पर चिन्तन करता है और अभी भी अपने जीवन को महत्वहीन और न्यून मूल्य वाला सोचता है। वह उस बड़े मूल्य को नहीं समझता जो परमेश्वर ने उसकी अनन्त नियति को सुरक्षित रखने के लिए चुकाया। आप विशिष्ट हैं ?

मगरिज़ जो अपने जीवन का अन्त करने के निकट ही था, आख़िरकार उसने खोज ही लिया कि यीशु उसकी आन्तरिक भूख और

उसकी महत्ता की आवश्यकता से जुड़ा हुआ था,

"वह वास्तव में क्रूस पर मरा और मुर्दों में से जी उठा; वर्ना मेरे लिये कैसे उससे मिलना सम्भव था ?..... शब्द, जो यीशु ने बोले वे जीवित शब्द हैं, और आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं जितने कि तब थे जब पहले–पहल बोले गए थे; वह रोशनी जो उसने चमकाई थी, हमेशा–हमेशा तेज़ चमकने के लिये जारी है। वह जीवित है....." | जीसस रीडिस्कवर्ड, बंगे, सफ्लॉक यू.के. : फोन्टेना बुक्स, 1969 – पृष्ठ 8 (प्राक्कथन)

सी.एस. लुइस जिन्होंने मसीहियत को एक पौराणिक गाथा मानकर खारिज कर दिया था, और जिन्होंने विश्वास पर वैयक्तिक स्वतंत्रता की इच्छा की थी, वे यीशु मसीह की हम में से हर एक को व्यक्तिगत रूप से जानने और प्रेम करने की योग्यता से वशीभूत थे।

"वह हमसे भीड़ के हिस्से के रूप में व्यवहार नहीं करता। आप उसके साथ इतने एकाकी हो जाते हैं जैसे कि केवल आप ही वह जीव थे जिसकी उसने रचना की। जब यीशु मरा, तो वह केवल आपके लिए ही मरा, बिल्कुल ऐसे ही जैसे कि केवल आप ही एक व्यक्ति संसार में रहे थे" | मियर 168

मगरिज़, ग्रीनलीफ़, मॉरिसन, मैकडॉवेल और लुइस केवल कुछ जीवन हैं जो यीशु मसीह द्वारा बदल दिए गए। अनगिनत लाखों दूसरे भी हैं जिन्होंने जीवन बदल देने वाली शक्ति की खोज कर ली है जो यीशु ज़िन्दगी में ला सकता है। तौभी यह प्रमाण का एक रूप है जिसकी पुष्टि व्यक्तिगत रूप से की जाना चाहिए।

बाकी सभी नौ सूत्रों का पुष्टिकरण वस्तुनिष्ठ प्रमाण से किया जा सकता है। प्रमाण की भरमार है कि यीशु मसीह वही है जो होने का दावा उसने किया। तौभी मेरे और आपके लिए यीशु मसीह को वास्तविक होने के लिए, हमें उसे स्वयं को परिवर्तित करने के लिए निमंत्रण देना है। जीवन को परिवर्तित कर देने के लिए अपना जीवन उसे दे देना है। यीशु का आत्मिक डी एन ए हमें इस जीवन में उसके लिये जीने की शक्ति देगा और अनन्त जीवन भी; जो उसके पुनरुत्थित होने से प्रमाणित हुआ।

सूत्र संख्या 10 :
निष्कर्ष यह है कि आप ख़ुद को ढूंढ़ें :
यीशु मसीह ज़िन्दगियां बदल देता है।

चुनाव आपका है !

यीशु मसीह आपके लिये कौन है ? लुइस मेरे और आपके लिए परमेश्वर के इस अद्‌भुत निमंत्रण के विषय में लिखता है,

"अब वह निमंत्रण जो मसीहियत प्रस्तुत करती है वह यह है कि हम कर सकते हैं, अगर हम परमेश्वर को अपना कार्य करने दें। मसीह के जीवन में से उसे भागीदारी करने के लिए आने दें..... यीशु परमेश्वर का पुत्र है। अगर हम इस क़िस्म की ज़िन्दगी में सहभागी होते हैं तो हम भी परमेश्वर के बेटे–बेटियां कहलाएंगे" | मियर 177

कभी–कभी हमारा अहम् हमारे रास्ते में आ जाता है। अपने अहम् से जूझते हुए चक कोल्सन ने अन्ततः यह जान लिया कि यीशु मसीह उसके सम्पूर्ण समर्पण और निष्ठा के योग्य था। वह स्मरण करता है,

"..... और शुक्रवार को भोर ही, जब मैं अकेला बैठा उस समुद्र को जिसे मैं पसन्द करता था, निहारे जा रहा था, वे शब्द जिनके बारे में मैं निश्चित नहीं था कि उन्हें समझ सका अथवा अनायास ही मेरे होठों से निकल पड़े, प्रभु यीशु, मैं तुझ पर विश्वास करता हूं, मैं तुझे स्वीकार करता हूं, कृपया मेरे जीवन में आएं। मैं इसे आपको समर्पित करता हूं" | बॉर्न 130

आप भी यीशु मसीह के द्वारा प्रदान किए गए इस मुफ़्त प्रेम और क्षमा का अनुभव कर सकते हैं। बस उसके पास विश्वास से आना है, उसे यह बताना है कि आप उसे अपने जीवन के प्रभु और उद्धारकर्त्ता के रूप में स्वीकार करना चाहते हैं। यूहन्ना हमें बताता है कि परमेश्वर क्या चाहता है,

"..... जितनों ने उसे ग्रहण किया, उसने उन्हें परमेश्वर के सन्तान होने का अधिकार दिया....." | यूहन्ना 1:12

आइए, सारांश रूप में जानें कि आपके सृष्टिकर्त्ता ने आपके लिये क्या किया है :

1. आपके पैदा होने से पहले ही आपके अस्तित्व की योजना उसने बनायी।
2. उसने आपको रचा।
3. वह पृथ्वी पर आपको बचाने आया।
4. वह व्यक्तिगत रूप से आपके पापों के लिए मरा।
5. वह मृतकों में से जी उठा ताकि आप अनन्तकाल तक जिएं।
6. उसने आपको अपनी सन्तान के रूप में ग्रहण किया।
7. वह आपको एक अद्‌भुत विरासत की प्रतिज्ञा देता है।

क्या आपने उसे धन्यवाद देने और उसे अपने जीवन का प्रभु स्वीकार करने के प्रति समय दिया है ? अगर नहीं तो आप उन्हीं शब्दों से प्रार्थना कर सकते हैं जो चक कोल्सन ने कहे, जब उसने अपने जीवन को यीशु मसीह की ओर मोड़ दिया। उसके साथ सम्बन्ध ही आपकी अनन्त नियति है ! आप क्यों नहीं इसकी इस अनोखी भेंट को स्वीकार कर लेते हैं..... आज ही !